गलघोंटू (Hemorrhagic Septicemia)

गलघोंटू एक घातक जीवाणु जनित संक्रामक बीमारी है जो मुख्यता गाय और भैंस में मानसून के मौसम में होती है । यह बीमारी भेड़ बकरियों और सूअरों को भी प्रभावित करती है। इस रोग के कारण पशुओं में मृत्यु दर अधिक होती है इस कारण पशुपालकों को अत्यधिक नुकसान का सामना करना पड़ता है। यह रोग 6 माह से 2 वर्ष के आयु के पशुओं में अधिक होता है। युवा जानवर मुख्य रूप से प्रभावित होते हैं, और बारिश के मौसम में प्रकोप विशेष रूप से अधिक होता हैं, जब जीवाणु आसानी से फैल सकता है। जिन क्षेत्रों में मवेशियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता नहीं है, वहां सभी उम्र के पशुओं में गंभीर बीमारी होने की आशंका होती है।

रोग का कारण

गलघोंटू बीमारी पाश्चरेला मल्टोसिडा (*Pasteurella multocida*) नामक जीवाणु से होती है । यह जीवाणु अधिक नमी वाले मौसम में सक्रिय होता है और यह 2 से 3 सप्ताह तक संक्रमित मिट्टी एवं घास में सक्रिय रह सकता है । यह रोग बीमार पशुओं से स्वस्थ पशुओं में उनके सांस एवं स्त्राव से फैलता है । संक्रमित पानी एवं भोजन से भी पशुओं को यह बीमारी लग जाती है ।

रोग के लक्षण

- इस रोग में पशुओं को शुरु में तेज बुखार 106 से 107 डिग्री फारेनहाइट हो जाता है।
- ठंड लगने लगती है।
- बीमार पशु के मुंह से अत्यधिक लार बहने लगती है।
- गर्दन में सूजन के कारण सांस लेने के दौरान घर्र-घर्र की आवाज आती है।
- पशु खाना पीना बंद कर देता है ।

- बीमार पशु का समय पर इलाज ना होने की वजह से पशु की 12-24 घंटे के बाद मृत्यु हो जाती है।

गर्दन में सूजन

रोग की रोकथाम

1. गलघोंटू रोग की पुष्टि होने पर सर्वप्रथम संदिग्ध सामग्री जैसे कि दूध एकत्र करने का पात्र, वाहन एवं अन्य यंत्र को हल्के अम्ल, छार या जीवाणु नाशक द्रव्य से साफ करना चाहिए।
2. प्रभावित क्षेत्रों में वाहनों एवं पशुओं की आवाजाही रोक देना चाहिए।
3. बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग स्थान पर रखना चाहिए ताकि रोग स्वस्थ पशुओं में ना फैल सके।
4. पशु आवास को साफ़ सुथरा रखें। पशु के आसपास साफ-सफाई का खास ख्याल रखें और उसे सड़ा-गला चारा या गंदा पानी न पिलाएं।
5. बीमारी की संभावना होने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
6. 0.5% फिनाइल को 15 मिनट तक रखने पर इस रोग के जीवाणु मर जाते हैं।

7. जिस स्थान पर पशु मारा हो उस स्थान को कीटनाशक दवाइयों से धोना चाहिए।

रोग से बचाव

- इस रोग से बचाव करने के लिए पशुओं का टीकाकरण एकमात्र उपाय है वर्षा ऋतु से 2 महीने पहले (मई और जून) में टीका लगा देना चाहिए।
- पशुओं को आवश्यक जगह प्रदान करें।
- एक ही जगह/स्थान में अधिक जानवर ना रखें।
- पशु घरों को सूखा एवं साफ रखें।
- इस रोग से मरे पशु को गहरे गड्ढे में दफनाना चाहिए।

टीकाकरण

गलघोंटू टीकाकरण करने से यह रोग बरसात के मौसम में नहीं फैलता। एक बार टीकाकरण से पशु में 6 महीने से 1 साल तक प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न हो जाती है यह टीका बाजार में उपलब्ध है गाय भैंस में वैक्सीन की 2ml मात्रा त्वचा के नीचे दी जाती है

टीकाकरण पहली खुराक 6 महीने की आयु के जानवर को, बूस्टर खुराक प्रथम टीकाकरण के 6 महीने बाद और पुन: टीकाकरण - वार्षिक

क्र. स.	बिमारी का नाम	टीकाकरण की उम्र	अनुवर्धकः टीकाकरण	पुन: टीकाकरण	टीके की मात्रा एवम् विधि	उत्पाद का नाम
1.	गलघोंटू रोग	प्रथम टीका 6 माह की आयु पर	वार्षिक और प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में जैसे बेमौसम बारिश और चक्रवात, आदि		2 ml त्वचा के नीचे (S/C)	रक्षा एच एस (इर्डियन इम्यूनोलाजिकल)
2.	खुरपका मुंहपका + गलघोंटू + लंगड़ी	4 माह की आयु पर	प्रथम टीके के 9 माह पश्चात्	प्रति 12 माह बाद	3ml मांसपेशियॉ के अंदर (I/M)	रक्षा-ट्राईओवेक टीका (इर्डियन इम्यूनोलाजिक

	रोग/बुखार					ल)
3.	खुरपका मुंहपका + गलघोंटू	4 माह की आयु पर	प्रथम टीके के 9 माह पश्चात्	प्रति 12 माह बाद	3ml मांसपेशियॉ के अंदर (I/M)	रक्षा-वायोओवेक टीका (इडिंयन इम्यूनोलाजिकल)
4.	लंगड़ी रोग/बुखार+ गलघोंटू	प्रथम टीका 6 माह की आयु पर	वार्षिक और प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में जैसे बेमौसम बारिश और चक्रवात, आदि		3 ml त्वचा के नीचे (S/C)	रक्षा एच एस+बीक्यू (इडिंयन इम्यूनोलाजिकल)

रोग का उपचार

एंटीबायोटिक के उपयोग में लाने से पहले एंटीबायोटिक संवेदनशीलता परीक्षण आवश्यक है । जिसके बाद ही पशु में एंटीबायोटिक दिया जाना चाहिए।

नोट: अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम पशु चिकित्सालय पर संपर्क करें।

डॉ. राजेश अग्रवाल एवं डॉ. राजीव सिंह

पशु औषधि विभाग

पशु चिक्सिा एवं पशु पालन महाविघालय

शेर -ए- कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, आर.एस. पुरा, जम्मू